NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

R.D.D. -7

ग्राम विकास में संचार और विस्तार

(Communication and Extension in Rural Development)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Narad Rai*

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878   E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

ग्राम विकास में संचार और विस्तार

(Communication and Extension in Rural Development)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-3

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

संचार के मूल सिद्धांत और तकनीक
(Basic Principles and Techniques of Communication)

1. संचार का अर्थ, संकल्पना और कार्य 1
   (Meaning, Concept and Functions of Communication)

2. संचार चैनल और ग्राम विकास में उनके प्रयोग 17
   (Communication Channels and their Use in Rural Development)

3. संचार–ग्राम विकास के लिए मीडिया मिश्रण 26
   (Communication—Media Mix for Rural Development)

विस्तार : अवधारणा, दर्शन और दृष्टिकोण
(Extension: Concept, Philosophy and Approaches)

4. विस्तार की अवधारणा, दर्शन और सिद्धांत 43
   (Concept, Philosophy and Principles of Extension)

S.No. Chapterwise Reference Book Page

5. भारत में ग्राम विस्तार का ऐतिहासिक विकास 55
(Historical Development of Rural Extension in India)

6. ग्राम विस्तार के प्रकार 70
(Types of Rural Extension)

7. विस्तार प्रणालियां 84
(Extension Methods)

ग्राम विकास के लिये संचार-विस्तार सहायता नियोजन
(Planning Communication-Extension Support for Rural Development)

8. संचार सहायता 106
(Communication Support)

9. विस्तार प्रबंधन 116
(Extension Management)

10. संगठनात्मक संचार 128
(Organizational Communication)

11. ग्राम विकास के लिए संचार-कार्यनीतियाँ – मीडिया मिश्रण 138
(Communication Strategies for Rural Development —Media-Mix)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

ग्राम विकास में संचार और विस्तार

R.D.D.-007

(Communication and Extension in Rural Development)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

***नोट: सभी पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. जन माध्यमिक और पारस्परिक चैनल स्रोत से प्राप्तकर्ता तक संदेश के प्रसारण में मानार्थ भूमिका कैसे निभाते हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-18, 'संचार चैनलों की विशेषताएं'

अथवा

गोद लेने की प्रक्रिया के चरणों का वर्णन कीजिए। गोद लेने की प्रक्रिया में जागरूकता स्तर पर पारस्परिक चैनल कैसे महत्त्वपूर्ण हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-24, प्रश्न 2, प्रश्न 1, 'अंतर वैयक्तिक चैनल'

प्रश्न 2. चैनल के चयन में संदेश के प्रकार के महत्त्व पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-19, 'चैनलों का चयन और संयोजन'

अथवा

संदेश के संशोधन में श्रोताओं से प्राप्त प्रतिपुष्टि की भूमिका की व्याख्या कीजिए। जनसंचार अधिकतम प्रतिक्रिया की अनुमति कैसे देता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-11, प्रश्न 3

इसे भी देखें–प्रतिपुष्टि संचार का महत्त्वपूर्ण तत्व है। प्रतिपुष्टि एक तरह की सूचना होती है, जो प्राप्तिकर्त्ता की ओर से स्रोत या संप्रेषक को प्राप्त स्रोत है। जब सूचना का स्रोत या प्रेषक संचार करने का निर्णय लेता है और उसे किसी माध्यम से प्रसारित करके प्रापक तक पहुँचाता है। फिर प्रापक संदेश का विसंकेतीकरण करता है। इस प्रक्रिया के दौरान संदेश में कुछ शोर भी जुड़ सकते हैं। प्रापक संदेश पर क्रिया के बाद प्रेषक को अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करवाता है। संदेश पाने वाले की यह प्रतिक्रिया प्रतिपुष्टि होती है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि प्रापक जिस रूप में अनुक्रिया को ग्रहण करता है वह प्रतिपुष्टि हे। इससे स्पष्ट है कि संदेश देने के साथ आरम्भ और प्रतिपुष्टि के साथ सामप्ति के संदर्भ में संचार होता है, जो संदेश के अर्थ के प्रेषण और सम्पादन को सुनिश्चित करता है।

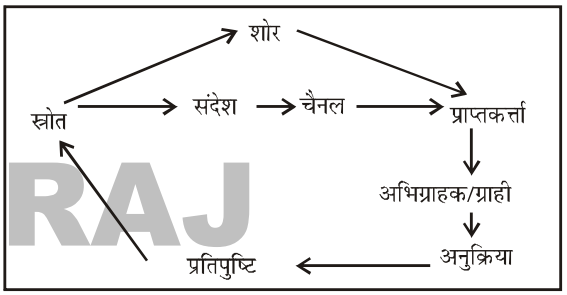

जब स्रोत को प्राप्तकर्त्ता से प्रतिपुष्टि परिणाम ज्ञान की प्राप्ति होती है तब वह अपने द्वारा संचारित सूचना के महत्व या प्रभावशीलता को समझ पाता है। प्रतिपुष्टि के आधार पर ही स्रोत यह भी निर्णय कर पाता है कि उसके द्वारा दी गई सूचना में किसी प्रकार के परिमार्जन की जरूरत है। केवल द्विमार्गी संचार में ही प्रतिपुष्टि तत्व पाया जाता है।

प्रतिपुष्टि संचार व्यवस्था में एक महत्त्वपूर्ण तत्व है। प्रतिपुष्टि के आधार पर स्रोत को इस बात की जानकारी मिलती है कि उसके द्वारा भेजी गई सूचना में किसी प्रकार के परिमार्जन की आवश्यकता है या नहीं। यह एक प्रकार से संदेश की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है तथा संचार की प्रक्रिया को पूर्ण करता है।

प्रतिपुष्टि सकारात्मक या नकारात्मक, दोनों हो सकती है। सकारात्मक प्रतिपुष्टि इंगित करती है कि स्रोत अपना संदेश उसी तरह से भेज सकता है। उसमें किसी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं हैं। नकारात्मक प्रतिपुष्टि के आधार पर प्रेषक अपने संदेश को प्रेषित करने के माध्यम, प्रक्रिया या तरीके का पुनरावलोकन करता है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) दृश्य सहायता से आप क्या समझते हैं? प्रदर्शन के लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-37, प्रश्न 3

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(ख) विस्तार की अवधारणा और बुनियादी दर्शन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-43, 'विस्तार का अर्थ और अवधारणा', पृष्ठ-44, 'विस्तार का दर्शन'

(ग) पंचायतों की त्रिस्तरीय व्यवस्था की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-62, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) भारत के सामुदायिक विकास कार्यक्रम की विफलता के कारण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-62, बोध प्रश्न 1

(ख) संविधान की विशेषताएं, 73वां संशोधन अधिनियम

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-58, 'संविधान 73वां संशोधन अधिनियम 1992'

(ग) गहन कृषि जिला कार्यक्रम

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-58, 'गहन कृषि जिला कार्यक्रम (आईएडीपी)'

(घ) एकीकृत आदिवासी विकास परियोजना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-60, 'समेकित जनजातीय विकास परियोजना (आईटीडीपी)'

(ङ) कमांड क्षेत्र विकास कार्यक्रम

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-60, 'कमान क्षेत्र विकास कार्यक्रम (सीएडीपी)'

(च) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-63, प्रश्न 4

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं पांच पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

(क) संचार योजना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-106, 'संचार योजना'

(ख) संचार प्रबंधन योजना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-110, प्रश्न 5 (ख)

(ग) संचार सहायता

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-111, प्रश्न 11

(घ) विस्तार रणनीतियां

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9 पृष्ठ 118 'विस्तार कार्य नीतियां'

(ङ) संचार में व्यावसायिकता

उत्तर–संचार के विस्तार कार्य को समुचित ढंग से चलाने और उससे वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए व्यवसाय संबंधी प्रवृत्ति को व्यावसायिकता कहा जाता है। विकास के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए व्यावसायिक क्षमता को बनाए रखना चाहिए, उसे अद्यतन करने के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण देना चाहिए।

बाजारवाद और भूमण्डलीकरण के इस दौर में अन्य क्षेत्रों की तरह संचार क्षेत्र को भी व्यावसायिक नजर से देखा जाना चाहिए। तथा वास्तव में संचार माध्यम पूरी तरह से व्यावसायिक हो चुका है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास तेजी से हो रहा है इसलिए विस्तार व्यावसायियों को अपनी क्षमता का विस्तार करना आवश्यक हो गया है। इसके लिए तकनीकी ज्ञान और कौशल प्राप्त करने के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि संबंधी अनेक समस्याएं होती हैं, जिनका विकास रेडियो के माध्यम से समाधान करने का प्रयास करते हैं। विस्तार कार्यकर्त्ता इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उसे किसानों में अपने प्रति विश्वास बनाये रखना चाहिए।

(च) संचार प्रक्रिया

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-11, प्रश्न 3

(छ) संचार उद्देश्यों को निर्धारित करने वाले कारक

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-144, प्रश्न 4

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

ग्राम विकास में संचार और विस्तार
(Communication and Extension in Rural Development)

संचार के मूल सिद्धांत और तकनीक
(Basic Principles and Techniques of Communication)

संचार का अर्थ, संकल्पना और कार्य
(Meaning, Concept and Functions of Communication)

1

परिचय

यद्यपि पृथ्वी पर मानव के अवतरण के साथ से ही संचार का महत्त्व रहा है, परन्तु वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति के लिए संचार आवश्यक हो गया है। ऐसा उसकी आवश्यकताओं की वृद्धि के कारण हुआ है। संचार समान्य रूप से एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक संदेश या सूचना पहुँचाने और प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है। वस्तुत: हम समाज में रहते हैं। समाज का सदस्य होने के कारण व्यक्तियों, समूहों और संस्थाओं के साथ स्थायी या अस्थायी संबंध स्थापित होता है, इसलिए एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति, व्यक्तियों के समूह या संगठनों के साथ संचार करना पड़ता है। संचार माध्यम संदेशों या सूचनाओं को पहुँचाने या प्राप्त करने के लिए होता है। आपसी वार्ता, भाषायी संचार, समाचारपत्र, पुस्तकें, पत्रिका, रेडियो, दूरदर्शन, टेप रिकॉर्डर आदि अनेक माध्यम या चैनल हैं। इनकी वृद्धि और विस्तार प्रौद्योगिकी उन्नति की देन है। संचार एक आसान प्रक्रिया है, परन्तु इसके विभिन्न माध्यमों के विश्लेषण की जानकारी प्राप्त करना जरूरी है।

अध्याय का विहंगावलोकन

परिभाषा

संचार कई रूपों में होता है; जैसे व्यक्तियों का आपस में बातचीत करना, किसी के लिए किसी व्यक्ति द्वारा लिखना, हाथ हिलाकर या अन्य संकेत द्वारा किसी व्यक्ति को बुलाना या मूल्य वृद्धि दिखाने के लिए किसी के द्वारा चार्ट बनाना आदि।

संचार प्रक्रिया के चार घटक होते हैं–स्रोत, संदेश, माध्यम और प्राप्तकर्त्ता। जो व्यक्ति बात कहता है, वह स्रोत है। स्रोत जो कहता है, वह संदेश है और जो वस्तु लक्ष्य तक संदेश को ले जाती है, वह माध्यम या चैनल है, जैसे हवा। संचार प्राप्तकर्त्ता संदेश ग्रहण करने वाला होता है।

संचार समाज और समुदाय के लिए आवश्यक है। बिना संचार के इनका निर्माण नहीं हो सकता और व्यक्ति एकाकी हो जाता है। संचार का आदान-प्रदान होता है, जिसे कम्युनिकेशन कहते हैं, जिसकी उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'कम्युनिस' से हुई है। जब कोई किसी से कुछ कहता है, तो वह उससे सम्बन्ध बनाता है। इस प्रकार संचार अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने और बदले में दूसरों को समझने का प्रयास है। यह प्रयास सफल या विफल हो सकता है।

जे. ब्लैक और क्रीड जे ह्विटनी ने अपनी पुस्तक में संचार को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है–

(i) संचार वह प्रक्रिया है, जो व्यक्तियों में अर्थ और स्रोत से संप्रेषण होता है।

(ii) संचार प्रक्रिया द्वारा एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाया जाता है।

(iii) संचार में कोई सूचना एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जाती है।

(iv) संचार में वे सभी प्रक्रियायें शामिल होती हैं, जिनसे लोग एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

(v) संचार उस समय होता है, जब व्यक्ति ग माध्यम से घ व्यक्ति को च प्रभाव के साथ ख संदेश संचारित करता है।

कुछ विद्वान संचार को प्रेषक या स्रोत और प्राप्तकर्त्ता (receiver) के बीच होने वाली प्रक्रिया कहते हैं, जिसमें उद्दीप्त अनुक्रिया होती है। उदाहरण के लिए व्यक्ति की नाक को सुगंध उद्दीप्त करती है और मस्तिष्क (प्राप्तकर्त्ता) को सन्देश भेजती है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इसी प्रकार से जीभ, कान और त्वचा भी काम करती है। संचार दो छोरों से होता है, जिसमें माध्यम सूचना, ज्ञान, विचार, अभिवृत्तियां, विश्वास आदि का संदेश के रूप में आदान-प्रदान होता है।

चैनल या माध्यम वायु भी हो सकती है, जो सम्प्रेषण ध्वनियों को आगे ले जाती है। कागज पर छपी हुई पुस्तकें, पत्रिकायें, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जैसे रेडियो, मूर्तियाँ, छपे हुए कपड़े आदि भी संदेशवाहक होते हैं। इसमें कई स्थानों पर अपनी बात स्पष्ट करने के लिए कुछ विशेष प्रतीकों एवं संकेतों की जरूरत होती है। यह भाषा या कोड हो सकता है। जैसे कुत्ते को बताने के लिए 'कुत्ता' शब्द का प्रयोग किया जाता है। प्रायः भाषा की लिपि भी होती है, जिसमें उसे लिखा जा सकता है।

नृत्य में भी संदेश होता है, जिसमें विभिन्न अंगों की गति और भाव-भंगिमा द्वारा नृत्य की भाषा को प्रकट किया जाता है। नृत्य की भाषा भी भिन्न-भिन्न होती है; जैसे भरतनाट्यम, कुच्चीपुडी, ओडिसी आदि। पश्चिम में नृत्य के रूप में वाल्टज, फॉक्स, ट्रोर इत्यादि हैं। संचार के लिए प्रेषक और प्राप्तकर्त्ता को सामान्य भाषा की जानकारी होनी जरूरी है। संचार का उपयोग कई रूपों में होता है। सड़क की लालबत्ती भी संचार का रूप होती है, जो रुकने, जाने या तैयार रहने का संकेत देती है। इसी प्रकार कुत्ते का भौंकना, क्रोधित व्यक्ति का चेहरा भी संचार को व्यक्त करता है।

संप्रेषण जैसी आपसी क्रिया प्रतीकों के माध्यम से होती है। ये प्रतीक हाव-भाव, चित्रात्मक, प्लास्टिक, भाषायी या अन्य प्रतीक हो सकते हैं, जो व्यवहार में उद्दीपन का कार्य करते हैं। इस प्रकार संचार में कई गतिविधियां एवं अभिव्यक्तियां शामिल होती हैं, जो एक-दूसरे को समझने में सहायता करती हैं।

इस प्रकार संचार एक गतिशील प्रक्रिया है, जो समाज या समुदाय में व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करती है। इस संचार को भाषा, लेखन, गीतों, शरीर के हाव-भाव से भी व्यक्त किया जाता है।

चार विशेषतायें–संचार की चार विशेषतायें होती हैं–

(i) संचार निरन्तर होता है,
(ii) संचार वैयक्तिक होता है,
(iii) संचार वृत्तीय होता है,
(iv) संचार अनुक्रमणीय होता है।

व्यक्ति में संचार की प्रक्रिया सदैव चलती रहती है, व्यक्ति को कभी-कभी इसका पता भी नहीं लगता। व्यक्ति हमेशा संदेश भेजता है या प्राप्त करता है। हम टी.वी. पर समाचार, संगीत आदि सुनकर उसके बारे में स्वयं अच्छे-बुरे का विश्लेषण करते हैं। रास्ते में चलते समय फूल या पोस्टर, वाहन, दुकान आदि देखकर सक्रिय या निष्क्रिय प्रतिक्रिया करते हैं। ये सभी क्रियायें अन्तर्वैयक्तिक होती हैं और विभिन्न वस्तुएं, पोस्टर, दुकान की वस्तुएं, वाहन आदि स्रोत हैं। आंख, कान, त्वचा, जीभ, नाक आदि चैनल या माध्यम हैं। इनके द्वारा व्यक्ति सतत संप्रेषण करता रहता है, इसीलिए कहा जाता है कि संचार सतत चलने वाली प्रक्रिया है।

संचार व्यक्तिगत होता है, क्योंकि संदेश को जिस रूप में ग्रहण किया जाता है, वह व्यक्ति की मनःस्थिति, पृष्ठभूमि और उसके लक्ष्यों पर निर्भर करता है। समय, परिस्थिति, स्थान आदि के आधार पर कोई सन्देश किसी व्यक्ति के लिए अलग अर्थ में हो सकता है। संचार प्रक्रियाओं में कई परिवर्तन होते हैं, जो परिणाम को सुनिश्चित करते हैं।

संचार सतत, व्यक्तिगत होने के कारण वृत्तीय (Circular) होता है। जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को सन्देश देता है, तो संचार कहाँ से शुरू होता है, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। उदाहरण के लिए–राम नमस्कार कर रहा है, तो हो सकता है कि श्याम उसके नमस्कार करने से पहले ही मुस्करा रहा हो।

जब किसी को कोई संदेश दिया जाता है या लिखा जाता है, तो वह अनुत्क्रमणीय बन जाता है। अर्थात जो संदेश भेजा या लिखा जाता है, वह वापस नहीं लिया जा सकता। इस प्रकार स्रोत द्वारा दिया गया संदेश प्राप्तकर्त्ता द्वारा लिये जाने के पश्चात अनुत्कमणीय बन जाता है।

संचार के स्तर

संचार मूल रूप से चार स्तरों पर व्यक्त किया जा सकता है–

(i) अंतर्वैयक्तिक,
(ii) सामूहिक,
(iii) संगठनात्मक,
(iv) जनसमूह या सर्वसमाज।

कुछ विद्वान इनके अतिरिक्त दो अन्य स्तर भी बताते हैं–

(i) अंतरावैयक्तिक, और
(ii) अंतरासमूह।

अंतरावैयक्तिक संचार सम्प्रेषण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होता है। इस प्रकार के संचार का मुख्य भाग प्रत्यक्ष अंतर्क्रिया का कार्यक्षेत्र या विस्तार है। समूह के अंदर होने वाला संचार अंतरासमूह संचार कहा जाता है।

अंतरावैयक्तिक संचार को सूचना प्रक्रमण (प्रोसेसिंग) भी कहते हैं। अंतरावैयक्तिक संचार के लिए बाहरी उद्दीपन आवश्यक है। इसमें सम्पूर्ण चिंतन अंतरावैयक्तिक और सचेतन होता है। अवचेतन अंतरावैयक्तिक संचार सपने जैसा है, जिस पर नियंत्रण नहीं हो सकता। इसमें स्रोत और प्राप्तकर्त्ता एक ही व्यक्ति होता है। जैसे कोई व्यक्ति रेलगाड़ी के आने का इंतजार कर रहा है। गाड़ी धीमी गति से उसके पास से गुजर रही है। वह सोचता है कि इस पर चढ़ूं या छोड़ दूँ। अंततः वह न चढ़ने का विचार करता है, क्योंकि चढ़ने पर खतरा हो सकता है।

सामूहिक संचार भी महत्त्वपूर्ण होता है, परन्तु यह कई प्रकार का होता है। प्रत्येक व्यक्ति कई समूहों से संबंधित होता है। प्राथमिक समूह परिवार है, जो सर्वाधिक उल्लेखनीय होता है, क्योंकि यह सामाजिक एकता एवं संपूर्ण अनुभव प्रदान करता है। इसके अलावा आकस्मिक, अस्थायी और स्थायी समूह होते हैं। आकस्मिक समूह

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

स्वत: स्फूर्त होते हैं। जैसे घटना के समय कई लोग एकत्र हो जाते हैं, परन्तु बाद में वे अपनी-अपनी राह पकड़ लेते हैं और छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। अस्थायी समूह का निर्माण किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए व निश्चित अवधि के लिए किया जाता है। एक अस्थायी समूह की अपनी क्रियाविधि भी होती है। उदाहरण के लिए–विधानमंडलों द्वारा ग्रामीण समस्याओं; जैसे ऋण से संबंधित अस्थायी समितियां बनाई जाती हैं। इस समस्या के हल हो जाने के पश्चात समिति समाप्त हो जाती हैं। इन समितियों में कुछ लोग नेतृत्व करते हैं और शेष लोग उसका अनुसरण करते हैं। सामूहिक कार्यों में विभिन्न व्यक्तियों का संबंध होता है और सभी का इसमें हित निहित होता है।

स्थायी समूह में सदस्यता और नेतृत्व निश्चित होते हैं। इसके उदाहरण छात्र संघ, मजदूर संघ, शैक्षिक संघ, पंचायत आदि स्थायी समूह हैं। स्थायी समूह के कुछ निश्चित नियम होते हैं, परन्तु नेतृत्व एवं सदस्यता के परिवर्तन से इसमें भी परिवर्तन होता है। सदस्य सक्रिय होते हैं और वे विभिन्न पदों को सम्भालते हैं।

समूह में उद्देश्यों का पूरा होना समूह की संचार प्रक्रिया, सदस्यों के आपसी संबंधों, समूह संरचनाओं, उसकी मान्यताओं और नियमों आदि पर आधारित होता है। समूह के अच्छे भविष्य के लिए समूह में संचार स्वतंत्र होना चाहिए।

संगठन में संगठनात्मक संचार होता है। संगठन में सदस्यों के व्यवहार पर नियंत्रण रखने के लिए निश्चित कार्यप्रणाली होती है। संगठन में कई समूह हो सकते हैं, जो संगठन में समन्वय स्थापित करते हैं। इसमें संचार चैनल औपचारिक और अनौपचारिक दोनों होते हैं। संगठन में कई विभाग, भाग और उपसमूह आदि होते हैं। जैसे समाचार प्रकाशन संस्था में विज्ञापन विभाग, कार्मिक विभाग, समाचार विभाग आदि समूह होते हैं। बड़े समाचार विभाग में सम्पादन, रिपोर्टिंग और प्रूफ रीडिंग विभाग जैसे कुछ उपसमूह होते हैं।

औपचारिक संगठन में अनौपचारिक संगठन औपचारिक सोपानक्रम संरचना के समान्तर होते हैं। जैसे संपादक, समाचार संपादक, ब्यूरो प्रमुख आदि समान स्तर पर मिलकर उनसे अंत:क्रिया कर सकते हैं। जनसंचार में स्रोत औपचारिक संगठन होता है। प्रेषक और प्राप्तकर्त्ता के मध्य संबंध एक दिशात्मक होता है। जनसंचार के वाहक जन-संचार माध्यम कहलाते हैं। प्रकाशन उद्योग, समाचारपत्र और पत्रिकायें, फिल्में, रेडियो व टेलीविजन इसके उदाहरण हैं।

एक समाचारपत्र के माध्यम से संचार के स्तर को स्पष्ट किया जा सकता है। लातूर में आये भूचाल की जानकारी रिपोर्टर समाचार पत्र को प्रेषित करता है। समाचार कार्यालय में इस खबर का सम्पादन किया जाता है। रिपोर्टिंग और सम्पादन के मध्य की अवधि में घटना की मौलिकता बदल जाती है। समाचार की निष्पक्ष रूप से खबर छापी जाती है, जिसे करोड़ों लोग पढ़ते हैं। प्रतिक्रियास्वरूप पाठक सम्पादक को पत्र भेजता है। डेनिस मैक्सवेल ने अपनी पुस्तक *'मास कम्युनिकेशन थ्योरी'* में बताया है कि सभी स्तरों पर लोग खबर के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं और विभिन्न प्रकार के प्रयास व सिद्धान्तों की खोज करते हैं। सभी पाठक एक-दूसरे के साथ या आपस में एकाकीपन की स्थिति में वार्तालाप करते हैं। यही अंतर्वैयक्तिक संचार है। विभिन्न समूह या संगठनों में इस प्रकार की वार्ता होती है। यहाँ संदेशों के प्रेषक का लक्ष्य कोई विशेष व्यक्ति या प्राप्तकर्त्ता नहीं होता।

संचार के तत्त्व

संचार के चार तत्त्व या अवयव होते हैं–स्रोत, संदेश, चैनल, और प्राप्तकर्त्ता। दूरदर्शन के 'कृषि दर्शन' कार्यक्रम में स्रोत दूरदर्शन होता है, संदेश कृषि दर्शन होता है, चैनल टी.वी. सेट होता है और प्रापकत दर्शक होते हैं। इसी प्रकार अखबार में स्रोत समाचारपत्र फर्म, संदेश समाचार, चैनल मुद्रित समाचारपत्र और प्राप्तकर्त्ता पाठक होते हैं। इसमें चार उप अवयवों–शोर, ग्राही, अनुक्रिया और प्रतिपुष्टि को जोड़ा जा सकता है।

संचार प्रक्रिया को समझने के लिए रमेश और सुरेश के बीच होने वाली वार्ता को लिया जा सकता है। कल्पना की जाए कि रमेश सुरेश को 'गुड मॉर्निंग' कहता है। यहाँ रमेश स्रोत है, गुड मॉर्निंग संदेश है और रमेश प्राप्तकर्त्ता है। आवाज वायु द्वारा पहुँचती है, इसलिए वायु माध्यम का चैनल है। यदि किसी कारणवश जैसे गाड़ी के गुजरने से सुरेश आवाज नहीं सुन पाता, तो इस बाधा को 'शोर' कहते हैं। यह बाधा कुछ भी हो सकती है। सुरेश अंग्रेजी न समझता हो। यदि दूरदर्शन पर चैनल खराब है, तो इसका कार्यक्रम नहीं देखा जा सकता। इसे भी शोर कहा जायेगा। इस प्रकार शोर सन्देश को विकृत कर देता है। अखबार में खबर अस्पष्ट हो सकती है।

इस शोर की समस्या से कई प्रकार से निपटा जा सकता है। एक तरीका पुनरावृत्ति है। जैसे टेलीप्रिंटर के खराब सन्देश की पुनरावृत्ति (दोहराना) की जा सकती है। चैनल में सुधार लाकर भी शोर समाप्त किया जाता है। अखबार में लिखी हुई गलती सुधारी जा सकती है। टी.वी. पर खराब चित्र को ठीक किया जा सकता है। प्राप्तकर्त्ताओं की आवश्यकतानुसार स्रोत के प्रकार में भी परिवर्तन किया जा सकता है। माइक की आवाज धीमी होने पर उसे तेज किया जा सकता है।

संदेश प्राप्त करने के लिए संवेदी अभिग्राही ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे दूरदर्शन के कार्यक्रम को आंखों से देखा जाता है और कान से सुना जाता है। इस प्रकार शरीर के अंग सन्देश प्राप्त करने में सहायक होते हैं।

सन्देश प्राप्तकर्त्ता इसके प्रति अनुक्रिया करता है, जो बाहरी और आंतरिक दोनों हो सकती है। अनुक्रिया से ही प्रतिपुष्टि होती है। सुरेश के रमेश को 'गुड मॉर्निंग' कहने पर सुरेश या तो चुप रहता है या बदले में वह भी गुड मॉर्निंग कहता है। ये दोनों ही अनुक्रिया हैं। सुरेश रमेश के चुप रहने या गुड मॉर्निंग कहने पर जो प्रतिक्रिया करता है, वह प्रतिपुष्टि है। सुरेश के अभिवादन पर सुरेश की चुप्पी कई बातों का सन्देश देती है–या तो वह नाराज है, शत्रु है या उसे कोई गलतफहमी हो सकती है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इस प्रकार संचार प्रक्रिया में आठ अवयव होते हैं, जो आश्चर्यजक रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। प्राप्तकर्त्ता के स्तर के आधार पर प्रेषक के संदेश देने के ढंग में परिवर्तन हो जाता है। उदाहरण के लिए–सुरेश रमेश को बुलाकर कुछ कहना चाहता है। यदि रमेश अधीनस्थ कर्मचारी है, तो सुरेश रमेश को रौब से बुलाकर उसे अपनी बात कहेगा। यदि रमेश सुरेश का बॉस है, तो सुरेश स्वयं उसके पास जायेगा और सूचना देगा।

सफल संचार के लिए स्रोत को संचार प्रक्रिया के सभी तत्त्वों के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है। जैसे परिवार नियोजन अभियान को सफल बनाने के लिए इस विभाग के लोगों को अशिक्षित व्यक्ति के पास रेडियो और दूरदर्शन के चैनल के माध्यम से अपनी बात कहनी होगी। शिक्षित समझदार होने के कारण वे स्वयं ही परिवार नियोजन में रुचि लेते हैं। इसलिए इनके लिए पत्र-पत्रिकाओं आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

प्रत्यक्ष ज्ञान को प्रभावित करने वाले कारक

सभी प्रकार के सम्प्रेषण प्राप्तकर्त्ता के लिए होते हैं, इसलिए उसे इन्हें समझना आवश्यक है। यह जरूरी नहीं है कि किसी सन्देश को प्रेषक और प्राप्तकर्त्ता समान रूप से समझें। उदाहरण के लिए, यदि कोई तेलगुभाषी किसी हिन्दीभाषी को 'रंडी' शब्द से सम्बोधित करता है, तो वह बुरा मान जाता है, क्योंकि हिन्दी में उसका अर्थ 'वेश्या' है, जबकि तेलगु में इसका अर्थ है– 'आपका स्वागत है'। संदेश व्यक्ति पर निर्भर करता है। सभी व्यक्ति अनेक प्रकार की वस्तुओं से विभिन्न प्रकार से उद्दीप्त या सक्रिय होते हैं। एक वस्तु किसी को अच्छी लगती है, जबकि दूसरे को वह पसंद नहीं होती। इस प्रकार व्यक्ति का ज्ञान या समझ विभिन्न कारकों से प्रभावित होती हैं, जो निम्नलिखित हैं–

(i) **चयनात्मकता**–पर्यावरण में अनेक वस्तुएं ऐसी हैं, जो हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। कुछ की ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। इसके पीछे शारिरिक और मनोवैज्ञानिक कारक होते हैं। मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियों की अपनी कुछ सीमायें हैं, जैसे–हमारी आंखें सामने देख सकती हैं, परन्तु पीछे नहीं। कान कई आवाज एक साथ नहीं सुन सकता। मनुष्य सभी उद्दीपकों से आकर्षित नहीं होता, क्योंकि इसमें सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होती है। कश्मीर की बर्फबारी बाहरी लोगों के आकर्षण का विषय है, परन्तु स्थानीय निवासियों के लिए कष्टकारक है।

(ii) **मनोवैज्ञानिक सेट**–व्यक्ति के कई अनुभव उसकी मन:स्थिति का निर्माण करते हैं। मनोवैज्ञानिक सेट दैनिक संचार को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए–कोई व्यक्ति बीमा कम्पनी के एजेंट से बात करता है, तो उस व्यक्ति की यह मानसिक अवधारणा बन जाती है कि एजेंट उसे पॉलिसी लेने के लिए कहेगा। चयनात्मकता और मनोवैज्ञानिक मन:स्थिति किसी व्यक्ति को अंत:क्रिया करने से रोकती है। वस्तुत: अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि वातावरण को निश्चित तरीके से देखने या पूर्व निर्णय करने की प्रवृत्तियां मनुष्य में विद्यमान रहती हैं।

(iii) **संवेदी संगठन**–मनुष्य अपनी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा सुनकर, चखकर, छूकर या सूंघकर सूचनाओं को एकत्र करता है। इनके आधार पर वस्तुओं को संगठित किया जाता है। जैसे गोलाकार वस्तुओं को एक वर्ग में या आयताकार वस्तुओं को दूसरे वर्ग में रख सकते हैं।

(iv) **रूप**–वस्तुओं का रूप भी समझ को प्रभावित करता है। जिन वस्तुओं में नियमित और तार्किक संरचना होती है, उन्हें आसानी से पहचाना और वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे किसी संगीतज्ञ का राग या सुर निश्चित होता है। यदि वह उसे बदल देता है, तो लोगों का ध्यान उससे हट जाता है। यह संगीतज्ञ और स्रोत के मध्य संचार का अंत होता है।

(v) **रिक्तपूर्ति (Closure)**–रिक्तपूर्ति वह समझ है, जो सन्देश के तर्क के अनुसार अन्तरालों को भरने की क्षमता रखती है। जैसे कोई बच्चा मनुष्य की आकृति बनाते समय केवल एक कान बनाता है, तब दूसरा समझ वाला व्यक्ति कहता है कि एक कान और बनाना चाहिए। इस प्रकार अधूरे वाक्य को भी पूरा किया जाता है।

(vi) **सामान्य नियति (Common Fate)**–मनुष्य की यह प्रकृति है कि वह सामान्य नियति वाली वस्तुओं को याद रखता है; जैसे जोंक की सामान्य नियति खून चूसना है।

अर्थ निकालना

संचार का तात्पर्य ही व्यक्तियों के बीच अर्थ का सम्प्रेषण है–यह संदेश देने या प्राप्त करने जैसा ही है। आमने-सामने की बातचीत से सन्देह स्पष्ट हो सकता है। जैसे यदि ख, क की बात नहीं समझता, तो वह क को स्पष्टीकरण के लिए कह सकता है, परन्तु उसकी अंतर्क्रिया उनके सामाजिक मूल्यों, प्रथाओं और समझ पर आधारित है।

अन्तर्वैयक्तिक स्तर पर संचार एक अंतर्वैयक्तिक प्रक्रिया है, जिसमें अर्थ ग्रहण करने की शर्तों वाले तीन आधार हैं–

(i) संचार के लिए सामान्य अनुभव का आधार,

(ii) आधार के संदर्भ की कोई पद्धति,

(iii) अर्थ ग्रहण करने वाला संबंध। लोगों के समाज में कई वस्तुएं सामान्य होती हैं, जैसे–जीवन जीने के तरीके, भाषा, व्यवहार, संगीत, साहित्य आदि। इस प्रकार व्यक्ति का सामान्य अनुभव भरपूर होता है।

संदर्भगत प्रणाली संकेतों का निर्माण करने और उन्हें बनाये रखने का प्रणाली है। संकेतन में एक वस्तु हमारे लिए संकेत बन

www.neerajbooks.com